स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा द्वितीय वर्ष
आधुनिक काव्य

जयशंकर प्रसाद

Qus ⇒ प्रसाद की काव्य साधना का विवेचन करें
अथवा
प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालें
अथवा
प्रसाद का साहित्यिक परिचय दें।

Ans ⇒ यद्यपि प्रसाद जी ने सभी विधाओं में रचनाएं की किन्तु उनकी प्रतिभा का उत्कर्ष काव्य में ही दिखता है। कविता की दृष्टि से उनकी रचनाएं निम्नलिखित हैं —

रचनाएं -

(1) महाकाव्य — कामायनी
(2) खण्ड काव्य — प्रेमराज्य, प्रेमपथिक, महाराणा का महत्व, आंसू।
(3) काव्य रूपक — करुणालय
(4) गीतिकाव्य — शोकोच्छ्वास, कानन कुसुम, चित्राधार, झरना, लहर।
(5) चंपू — उर्वशी, बभ्रुवाहन।

जयशंकर प्रसाद छायावाद-युग के प्रवर्तक के रूप में हिन्दी काव्य संसार में आये। उनकी कविताओं से ही सर्वप्रथम वे प्रवृत्तियाँ मिली, जिनके आधार पर उनका युग 'छायावाद-युग' कहलाया।

जिस समय प्रसाद जी हिन्दी काव्य मंच पर आये, उस समय इतिवृत्तात्मक कविता की धूम थी। कुछ लोग रीति-कालीन परम्परा का अनुमोदन कर रहे थे और कुछ लोग भारतेंदु द्वारा इंगित आदर्शों को स्थान देने के पक्ष में थे। इसी द्वन्द्व के झूले पर हिन्दी कविता झूल रही थी। ऐसी विषम परिस्थिति में ही प्रसाद का अविर्भाव हिन्दी कविता के प्रांगण में हुआ।

प्रारम्भ में प्रसाद जी ब्रजभाषा में कविताएँ करते थे। ब्रजभाषा में रची उनकी कविताओं का संग्रह 'चित्राधार' के नाम से प्रकाशित हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के प्रभाव में आकर खड़ी बोली में रचनाएँ करने लगे, परन्तु उन्होंने द्विवेदी युग की नीतिवादी तथा इतिवृत्तात्मक शैली को नहीं अपनाकर गीतिकाव्य शैली को अपनाया। उन्होंने खड़ी बोली शैली में - करुणालय, प्रेमपथिक कानन कुसुम और महाराणा का महत्व नामक पुस्तकें लिखी-

प्रेमपथिक काव्य भी प्रथमतः ब्रजभाषा में ही लिखा था। बाद में यह खड़ी बोली प्रकाशित हुआ। 'झरना' में प्रसाद जी ने स्वच्छंदतावादी शैली अपनायी। इसमें रहस्यवादी प्रवृत्ति लक्षित हुई और इस रहस्यवाद में छायावाद के अंकुर वर्तमान थे।

सात वर्षों के बाद काव्य संग्रह के रूप में 'आंसू' का प्रकाशन हुआ, जिसमें प्रसाद जी की प्रौढ़ता तथा छायावादी प्रवृत्तियां स्पष्ट लक्षित हुई। प्रसाद जी की इसी कृति में सर्व प्रथम छायावाद का पूर्ण स्वरूप उभरा हुआ दिखा। 'आंसू' में प्रसाद जी ने प्रेम-वेदना का दिव्य स्वरूप प्रस्तुत किया। 'प्रेम और निराशा', 'सुख और दुख' आदि 'आंसू' में करुणा हृदय के प्रिय विषय बनकर आए हैं।

आंसू के प्रकाशन के बाद प्रसाद जी का काव्य संग्रह 'लहर' का प्रकाशन हुआ। 'झरना' से 'लहर' तक की यात्रा में प्रसाद जी की कविता में कानिपुर्ण परिवर्तन हो चुका था। लहर में भावों की प्रौढ़ता, विचारों की गम्भीरता स्पष्ट होकर आई है। लहर में रहस्यवादी दृष्टिकोण को स्थापित कर प्रसाद जी ने अपनी काव्य प्रतिभा को उत्कर्ष पर पहुँचा दिया है।

कामायनी छायावाद का प्रथम महाकाव्य है। प्रसाद जी का काव्य कला का चर्म विकास कामायनी महाकाव्य में हुआ। इसमें प्रसाद जी महाकाव्य के रूप में प्रकट हुए। इसमें सम्पूर्ण जीवन को दार्शनिक दृष्टि से देखने के प्रयास में कवि को पूर्ण सफलता मिली।

प्रसाद जी की काव्य प्रवृत्तियाँ →

हिन्दी कविता के क्षेत्र में जिस समय प्रसाद जी का आविर्भाव हुआ था, उस समय भारत में अंग्रेजी शासन था और स्वतंत्रता आन्दोलन का आवेग प्रबल था। इसका प्रभाव साहित्य पर तेजी से पड़ रहा था। उपदेश, विचार, ज्ञान प्रसाद जी को पसन्द नहीं थी। वह विचार के पक्षधर नहीं थे, भाव के ग्राहक थे। काव्य तत्व की प्रधानता देते थे और भावों की अभिव्यक्ति प्रायः लाक्षणिक रूप में करते थे।

भावना के क्षेत्र में प्रसाद जी ने परम्परा का अनुगमन नहीं किया। स्वच्छंदता वादी काव्य व शैली के द्वारा नवीन उद्भावनाओं और कल्पनाओं की सृष्टि की। कल्पना और भावना को संयुक्त कर इन्होंने हिन्दी कविता के क्षेत्र में सौंदर्य के नए आयाम उद्घाटित किए।

प्राचीन भारत की गरिमा शौर्य और संस्कृति से इन्हें विशेष प्रेम था। वह सांस्कृतिक चेतना के कवि थे और राष्ट्रीय भावनाओं के पोषक थे। प्रसाद जी पूँजीवादी सभ्यता के भी विरोधी थे।

प्रसाद जी की काव्य साधना →

प्रसाद जी मूलतः प्रेम के कवि हैं। इनके काव्य में प्रेम का उदात्त एवं सुन्दरतम चित्रण हुआ है। इन्होंने ऐन्द्रिय प्रेम का स्थूल नहीं बल्कि आत्मिक एवं दिव्य बनाया है।

Scanned with CamScanner

इनके सौंदर्य प्रेम में शारीरिक पक्ष का आधार अवश्य है किन्तु मानसिक पक्ष की प्रधानता ही पाई जाती है। प्रेम के कारण उनकी कविता में हृदय पक्ष की प्रधानता है, प्रसाद की सौंदर्य दृष्टि अत्यन्त तलस्पर्शी है। उनका सौंदर्य वर्णन स्थूल कम है सूक्ष्म और मार्मिक अधिक। 'कामायनी' में सौंदर्य को परिभाषित करते हुए प्रसाद जी ने लिखा है—

" उज्ज्वल वरदान चेतना का,
सौंदर्य जिसे सब कहते हैं,
जिसमें अनन्त अभिलाषा के
सपने सब जगते रहते हैं।

स्पष्ट है कि सौंदर्य विधाता की सृष्टि ही नहीं वरदान भी है।

सौंदर्य के अनेक पक्ष →

नारी के रूप सौंदर्य के वर्णन क्रम में वासना की जगह त्याग की प्रधानता है। नारी-चित्रण सूक्ष्म और श्लील है—

" नील - परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।"

यह चित्र लौकिकता के भार से ग्रसित नहीं है, प्रसाद जी ने नारी के सौंदर्य में लज्जा को महत्त्व दिया है—

"तुम कनक किरण के अंतराल में
लुक छिपकर चलते हो क्यों।"

— — — —

हे लाज भरे सौंदर्य बता दो
मौन बने रहते हो क्यों।"

(6)

प्रसाद जी का प्रकृति प्रेम और राष्ट्र प्रेम एक साथ उत्कृष्ट प्रकट हुआ है। यहाँ प्रकृति का मानवीकरण अत्यंत सुन्दर हुआ है—

" बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा घट उषा नागरी।"

इसी प्रकार सांस्कृतिक चेतना पर प्रसाद जी का राष्ट्र प्रेम और अपनी मातृभूमि के प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति गहरा प्रेम इस प्रकार हुआ है—

" अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुंच अनजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रसाद जी में प्रेम के कई रूप हैं— नारी प्रेम, मानवप्रेम, प्रकृति प्रेम और राष्ट्र प्रेम।

प्रसाद जी ने राष्ट्रीय जागरण को भी अपने काव्य में स्थान दिया है तथा पूंजीवादी सभ्यता और साम्राज्य वाद पर प्रहार किया है और मानव की गरिमा स्थापित की है।—

" क्यों इतना आतंक ठहर जा ओ गरवीले,
जीने दे सबको फिर तू भी सुख से जी ले"

प्रसाद जी ने दार्शनिक भावनाओं का भी बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। प्रसाद जी सुख - दुख की अनिवार्यता, विरह मिलन, संयोग-वियोग सभी को आनंद मानते हैं।—

" मानवजीवन वेदी पर
परिणय है, विरह मिलन का
सुख - दुख दोनों नाचेंगे
है खेल आंख का मन का।"

प्रसाद जी का 'आंसू' वेदना प्रधान काव्य है। गुलाब राय के शब्दों में- " प्रसाद जी का 'आंसू' नाम का छोटा सा काव्य अपने आकार को [illegible] एवं [illegible] सच्ची अभिव्यक्ति के कारण

मौतिक आंसू का ही प्रतिरूप है" — कवि की विरह जन्य अनुभूतियाँ ही आंसू बनकर टपक पड़ती हैं।

"जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छाई
दुर्दिन में आंसू बनकर
वह आज बरसने आई।"

प्रसाद जी की भाषा — प्रसाद जी की भाषा तत्सम प्रधान शुद्ध खड़ी बोली है, तथा कोमल, मधुर और सरस है। भाषा में सौन्दर्यांकन, भावाभिव्यक्ति तथा चित्र उपस्थित करने की अद्भुत शक्ति है। इनकी भाषा में लाक्षणिकता और उपचार वक्रता की प्रचुरता है। इनके काव्य में रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति आदि अलंकारों का सुन्दर निदर्शन हुआ है। भावों के प्रवाह को सहज गति देने में इनकी भाषा समर्थ है। मनोभावों एवं द्वंद्वों के चित्रण में भाषा अत्यंत सक्षम है। इनका शब्द-चयन ऐसा है, जैसा जड़ा हुआ नगीना हो। इनकी भाषा का अपना सौंदर्य और आकर्षण है। सांकेतिकता और चित्रमयता इनकी भाषा की मुख्य विशेषताएं हैं।

प्रसाद जी की काव्य शैली — कविताओं में संगीत और लय का विधान इनकी शैली की मुख्य विशेषता है। चित्रात्मक शैली में प्रसाद जी ने मानव और प्रकृति के मोहक चित्र प्रस्तुत किए हैं। काव्य शास्त्रीय दृष्टि से प्रसाद जी की शैली को हम पांच प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं

(1) मुक्तक काव्य (2) प्रबंध काव्य (3) गीतिकाव्य (4) चंपू काव्य (5) खण्ड काव्य

प्रसाद के काव्य में नाटक — ताटंक, रोला, रूपमाला आदि छंदों के अलावा मुक्त छंद या अतुकांत छंद के प्रयोग भी मिलते हैं। उर्दू के छंद का प्रयोग भी उनके काव्य में मिलता है। रस की दृष्टि से प्रसाद जी के काव्य में श्रृंगार, करुणा, वीर, शांत, वात्सल्य आदि रस के सुन्दर उदाहरण प्राप्त होते हैं।

Scanned with CamScanner